Vol.-24 No.-1-2021 RNI No. -46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-24-संख्या-1-2021

कला एवं धर्म शोध संस्थान, लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी

Refereed, Peer Reviewed Quarterly Journal Approved by UGC CA

कला सरोवर

KALA SAROVAR

(भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी

(Vol. 24-No.-1-2021) RNI No- 46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-24-संख्या-1-2021

कला सरोवर

कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी द्वारा संचालित

कला सरोवर (त्रैमासिक)

भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका

Referred, Peer Reviewed Quarterly Journal Approved by UGC Care

प्रकाशक : कला एवं धर्म शोध संस्थान
बी. 33/33 ए-1, न्यू साकेत कालोनी,
बी.एच.यू., वाराणसी - 221005
Phone- 0542- 2310682, Mob.- 9451397205

मूल्य : 1000.00 रुपये (Vol.-24-No.-1-2021)
वार्षिक सदस्यता शुल्क- 4000.00 रुपये
आजीवन सदस्यता शुल्क- 50000.00 रुपये

© प्रधान सम्पादक - कला सरोवर

ISSN : 0975-4520

Copyright (सर्वाधिकार सुरक्षित)

'कला सरोवर' शोध-पत्रिका में प्रस्तुत सभी लेखों, छायांकनों और रेखाचित्रों का अन्यत्र उपयोग प्रधान संपादक की पूर्व लिखित अनुमति से ही किया जायेगा। रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक ने अपने है। शोध-पत्रिका संपादक परिवार का उन प्रकाशित लेखों से उनका सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में लेखक /शोधार्थी स्वयं जिम्मेदार होगा।

कम्प्यूटर अक्षर संरचना :
कला कम्प्यूटर मिडिया
बी. 33/33 ए - 1, न्यू साकेत कालोनी,
बी0 एच0 यू0, वाराणसी-5
दूरभाष : 0542-2310682
Email Id : kalasarovarresearchjournal@gmail.com
kalaprakashanvns@yahoo.in

मुद्रक :
मनीष प्रिन्टिंग प्रेस
बी॰ 33/33-ए-1, न्यू साकेत कालोनी, बी॰एच॰यू॰, वाराणसी
पिन- 221005, उ॰ प्र॰

(Vol. 24-No.-1-2021) RNI No- 46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-24-संख्या-1-2021

विषयानुक्रमणिका

क्रम		पृ. सं.
सम्पादक की कलम से	... ...	iii
भारतीय साहित्य में चित्रकला *डॉ0 प्रेमशंकर द्विवेदी*	... ...	7-14
समकालीन कविता और काम करता बचपन *डॉ0 नीतू परिहार*	... ...	15-17
सुमित्रानंदन पंत का काव्य-शिल्प *डॉ0 सरिता*	... ...	18-21
पुस्तकालय के संग्रहण संसाधन एवं सेवाओं का अध्ययन छत्तीसगढ़ के निजी दूरस्थ विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में *सालिक राम, डॉ0 सरिता मिश्रा*	... ...	22-26
उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों की चुनौतियाँ : एक विवरणात्मक अध्ययन *सौरभ राय, डॉ0 आद्या शक्ति राय*	... ...	27-34
कामायनी-एक विश्लेषण *डॉ0 ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता*	... ...	35-39
ग्रामीण विकास में इण्टरनेट एवं सोशल मीडिया की भूमिका *डॉ0 पवन कुमार*	... ...	40-42
सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में सोशल मीडिया की भूमिका *डॉ0 पूजा सिन्हा*	... ...	43-46
सोशल मीडिया का इतिहास *डॉ0 प्रीति वाजप्ये*	... ...	47-50
साइबर अपराध और साइबर सुरक्षा जागरूकता *प्रिया पटेल*	... ...	51-55
विवाहित कार्यशील महिलाओं में सोशल मीडिया में रूचि का अध्ययन *प्रियंका सरोज*	... ...	56-60
पत्रकारिता का बदलता स्वरूप एवं इंटरनेट की उपयोगिता *डॉ0 विजय प्रताप सिंह*	... ...	61-63
सामाजिक आर्थिक परिवर्तन में इंटरनेट एवं सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका *श्रीमती शर्मिला मीणा*	... ...	64-66
वर्तमान परिदृश्य में ई-वाणिज्य का महत्व *यशवंत अलावा*	... ...	67-71
सोशल मीडिया और हमारा समाज *डॉ0 अनुपमा*	... ...	72-74
महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून की गतिशीलता में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव *जयेश कुमार*	... ...	75-81
सोशल मीडिया के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में विकास की संभावनाएं *डॉ0 रश्मि सिंह*	... ...	82-86
इन्टरनेट का बढ़ता प्रयोग एवं उसका सामाजिक प्रभाव : एक मूल्यांकन *डॉ0 अभय कुमार श्रीवास्तव*	... ...	87-89
अर्थतंत्र में साइबर अपराध और सुरक्षा सम्बन्धी उपाय *श्रीमती प्रियंका भारती, डॉ0 गगन कुमार*	... ...	90-93
सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी साहित्य *डॉ0 बॉबी यादव*	... ...	94-97
साइबर अपराध एवं साइबर सुरक्षा जागरूकता *डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार सिंह*	... ...	98-104
उच्च शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण वृद्धि में आईसीटी की भूमिका *डॉ0 सी0पी0 गुप्ता*	... ...	105-110
मीडिया के सामाजिक सरोकार *कमलेश कुमार*	... ...	111-112
कोविड-19 चुनौती के प्रति लोगों को जागरूक करने में सोशल मीडिया की भूमिका *कौशलेन्द्र विक्रम सिंह*	... ...	113-116
भाषा एवं साहित्य के विकास में इंटरनेट की भूमिका *नेहा श्रीवास्तव*	... ...	117-119

कामायनी-एक विश्लेषण

★ डॉ0 ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता

कामायनी में छायावादी तत्त्व

कामायनी खड़ी बोली हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है, यत्र–तत्र बिखरे पड़े ऐतिहासिक और पौराणिक तथ्यों को एकत्र कर प्रसाद ने अपनी कल्पना से व्याख्या की है। अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का सम्मिश्रण कर इसे अमर ग्रन्थ बना दिया। मुक्तिबोध के शब्दों में – "कामायनी में वर्णित सभ्यता प्रयासों के पीछे प्रसाद जी का अपना जीवनानुभव, अपने युग की वास्तविक परिस्थिति, अपने समय की सामाजिक दशा बोल रही है।"

छायावाद महज शिल्प के धरातल पर ही नहीं वरन् काव्य के धरातल पर भी नव्यता लेकर उपस्थित हुआ। हिन्दी कविता का क्रमिक अनुशीलन करता व्यक्ति जब छायावाद में प्रवेश करता है तो कल्पना की ऊँची उड़ान भरते कवि की आत्मीयता उसे सहज ही आकर्षित कर लेती है। कवि उससे रु–ब–रु बातचीत करता प्रतीत होता है। रीतियुगीन माझलता और द्विवेदीयुगीन निरीहता के स्थान पर उसे नारी के सूक्ष्म भाव सौन्दर्य के दर्शन होते हैं जो देवी, माँ, सहचरी और प्राण है। प्रकृति उसे पल–पल वेश बदलती हुई प्रकट होती है। वह इनमें खोना चाहता है; सौन्दर्य पर रीझना चाहता है; तो सामना होता है लाक्षणिक वैचित्र्य और विशेषण विपर्यय से। प्रसाद में इन छायावादी तत्त्वों के दर्शन 'झरना' से ही होने लगते हैं; किन्तु उसका पूर्ण उत्कर्ष 'आँसू' और 'कामायनी' में हुआ है। इसे लक्षित करते हुए आचार्य शुक्ल 'कामायनी' को 'छायावाद की पूर्णतर' कृति से अभिहित करते हैं; पंत थोड़ी कमी देखते हुए 'छायावाद का अधूरा ताजमहल' कहते हैं।

आधुनिक हिन्दी काव्य के अन्तर्गत छायावाद ने एक नवीन चिन्तन पद्धति तथा मनन प्रणाली को उद्घाटित किया था, जिसको आधार बनाकर कवियों ने ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं को वर्तमान से सम्बद्ध कर अपनी कृतियों का प्रणयन किया। प्रसाद ने अपने युग के बढ़ते भौतिक सौन्दर्य और अशान्ति को ध्यान में रखते हुए कामायनी की रचना की। इसमें उन्होंने देव सभ्यता के अंतिम और मानव सभ्यता के प्रथम पुरुष मनु तथा श्रद्धा के माध्यम से मानवता के विकास का रूपक बाँधा है। मनु और श्रद्धा का जैसा मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है वह पूर्ववर्ती काव्य में दुर्लभ है। यहाँ सूक्ष्म मनोभाव भी सशरीरी बनकर उपस्थित हुए हैं :–

कोमल किसलय के अंचल में नन्हीं कलिका ज्यों छिपती सी
गोधूली के धूमिल पट में दीपक के स्वर में छिपती सी।
मंजुल स्वप्नों की विस्मृति में मन का उन्माद निखरता ज्यों –
सुरभित लहरों की छाया में बुल्ले का विभव बिखरता ज्यों –
वैसी ही माया में लिपटी अधरों पर उँगली धरे हुए,
माधव के सरस कुतूहल का आँखों में पानी भरे हुए।
नीरव निशीथ में लतिका सी तुम कौन आ रही हो?
कोमल बाँहें फैलाये–सी आलिंगन का जादू पढ़ती।

छायावाद की इस सूक्ष्म चित्रण की प्रवृत्ति ने हिन्दी साहित्य को एक ऐसा नवीन सौन्दर्य बोध तथा रसात्मकता प्रदान की है, जिसके द्वारा कवि को सृष्टि के कण–कण में अनुपम सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। पहले के कवि का सौन्दर्य जहाँ वस्तुगत है, छायावादी कवि ने आत्मगत सौन्दर्य का चित्रण किया। इन कवियों ने प्रकृति के विविध ऐन्द्रियबोध जगाने वाले दृश्यों का भी अंकन किया है। लाल–नीले रंगों के बादल, भौरों, कोकिल आदि के स्वर तथा कुछ फूलों के गन्ध की चर्चा पहले

★ असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.